International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; July 2017; PAge No. 14-15

स्वातंत्रयोन्तर कहानी में दाम्पत्य सबंध

सत्यवीर जाट
शोधार्थी, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

आज हम 21 वी शताब्दी की जि।दगी मे सॉस ले रहे है! जहॉ हमारे पराम्परागत बॅधे हुये जीवन मूल्य और परम्पराये। आधुनिक स।दर्भो मे। हम। एक नये टकराव की परिस्थतियो। में खड़ा कर रही है। हमारे दादा परदादा के द्वारा सिखाये गये जीवन मूल्य '' प्रातः काल उठिके रघुनाथ मातु पिता गुरू नावहि माथा'' अर्थहीन और खोखले होते हुये नजर आ रहे है! 'बागवान' जैसी फिल्मो के माध्यम से जिसका सजीव व जीवन जीने जैसा चित्रण आज भी हमे घर घर मे दिखाई देता है तो हमारी ऑखे उन्ही संवेदनाओ। के धरातल पर अपनी अश्रुधारा बहाने मे हमें नही रोक पाती! जिसका कारण ये है कि हमारी संवेदनाये। तार तार हो चुकी है टूट चुकी है एकता शायद भूमिगत हो चुकी है! लोग देश की बात करते है एकता की बात करते है लेकिन व्यक्ति आज भी अपनी उदासी और अकेलेपन की पीड़ा से मुक्त होने के लिये छटपटा रहा है। वो अपने किसी पड़ोसी की वेदना से ही जुड़ना नही चाहता क्योकि उसकी वेदना खुद पड़ोसी से बड़ी है! इसका एक कारण संयुक्त परिवार का विघटन और अपने परिवार का विस्तार!

इसमें को।ई शक नही कि, समाज वहुत तेजी से वदला है, और वदलने का क्रम आज भी जारी है। जो धनवान लोगो के लिये वहुत सहज है, पर मध्यमवर्ग आज भी किसी के प्रति अपने आप को झुका हुआ महसूस नही कर पाता जिसकी पीड़ा, जिसके ऑसू जिसके कश्ट आज के कहानीकारो की कथाओ मे कल्पना जगत के माध्यम से इस विश्वास से विचरण कर रहे है। कि कही न कही। आने वाले समय मे हमारी वर्तमान सभ्यता और संस्कृति भारतीय नैतिक मूल्यो। के परिपालन मे अपना वो योगदान देगी, जो भारतीय सनातन मूल्यो। की रक्षा के लिये सतत् अक्षुण है। राजेन्द्र यादव के शब्दो। मे। – ''हमारे इस कथाकाल की सारी कहानियॉ संबंधो। के बनने की कहानियॉ नही, संबंधो। के टूटने की कहानियॉ है।..... पिछली पीड़ी के प्रति अविश्वास, घृणा और आपस मे। अपरिचय, अनिश्चय नई कहानी के माध्यम से बार बार आता है।[1]

आम आदमी परम्परागत सम्बन्धो। मे। ऐसा कुछ प्राप्त नही कर पा रहा जो उसकी मनः स्थिति को शा।त और शिथिल कर सके। किसी भी वर्ग का घर हो तनाव विहीन नही। है। सुख तो है पर शांति नही है जिसके अभाव मे। सहज जीवन से दूर जीने को व्यक्ति विवश है।

ज्ञान रंजन की कहानी 'सम्बन्ध' एक संवेदना हीन संसार मे। छटपटाते निम्नमध्यम वर्गीय आदमी के आंतरिक संसार की कहानी है, जिसमे। पीढ़ी की पीढ़ी इतनी निरीह हो गयी है कि सव कुछ टूटते हुये देखने मात्र की लाचारी शेश रह गयी है। कतिपय यह कहने मे जरा भी संकोच नही होगा कि दुनिया मे। रहने वाले लोगो मे। दुनिया बनाने वाले के प्रति कोई भावनात्मक रिश्ता कायम रहेगा या नही। कहानी मे। माँ और छोटे भाई के प्रति वितृश्णा और मृत्यु की कामना से स्पश्ट है कि उनके बीच 'तालमेल खत्म हो गया है जैसे या बिल्कुल बदलता हुआ तालमेल बन गया''।[1]

दूधनाथ सिंह की कहानी रक्तपात का नायक पिता की मृत्यु के कारण स्वय अपराध बोध से ग्रस्त है। माँ की सहानुभूति खोकर तथा पत्नी की बेहूदी हरकतो। के कारण वह अन्दर ही अन्दर टूटता चला जाता है। जड़ निराधार और निरूपाय सी स्थिति मे। तटस्थ उदासीन बना 'स।जय' नरक की इस जिन्दगी मे। विवश और आवेग शून्य हो गया है। उसकी सारी इच्छाएँ मर गयी है पहचान गुम हो गयी है अब उसे किसी बात का इ।तजार नही सारे सम्बन्ध धीरे–धीरे टूट गये है। ''कभी उसे लगता था कि सभी ने उसे छोड़ दिया है अब धीरे धीरे यह लगता है कि उसी ने अपने को छोड़ दिया है''।[2]

आधुनिक युग की नारी अपने स्वत।त्र व्यक्तित्व के प्रति सजग रहते हुये भी निर्मम, निर्विकार, और तटस्थ जान पढती है। उसे आज स्वत।त्रता के अलावा प्रेम, रोमांस से भी बड़ी चीज चाहिए। अभाव के साथ रहते हुये भी वह अकेलापन महसूस करती है। श्रीकान्त वर्मा की कहानी साथ का कपिल अपनी पत्नि रति के प्रति अपराध बोध के कारण स्व।य को छोटा अनुभव करता है, और फिर आत्मग्लानि से भर उठता है। उसे लगता है कि उसने पत्नी से नही आजीवन आत्मग्लानि से विवाह किया है''।।[3]

पति पत्नी सम्बन्धो। मे। आये तनाव टूटन व अकेलेपन के दर्द की अभिव्यक्ति देने वाली कहानियो। मे। 'कोजी कार्नर' (रवीन्द्र कालिया) 'टयूमर' परिणय (श्रीकान्त वर्मा) 'बादलो। के घेरे' (कृश्णा सोवती) आदि मुख्य रूप से चर्चा का विशय रही है। पाश्चात्य प्रश्ठभूमि पर दाम्पत्य जीवन मे। उत्पन्न अकेलेपन, अजनबीपन, रिक्तताबोध, उदासीनता और परायेपन को लेकर भी कुछ कहानियाँ लिखी गयी है। जिनमे। 'जीवन का विश' पेरिस और पतझड़ (रामकुमार) सागर पार का स।गीत (उशा प्रियव।दा) चौगान (मोहन राकेश) डेढ़ इ।च उपर (निर्मल वर्मा) आदि कहानियाँ मुख्य रूप से पति पत्नी सम्बन्धो। मे। आयी हुई दूरियो। के कारण अलगाव–वोध की इस त्रासदी को प्रस्तुत करती है।

दाम्पत्य जीवन मे। आयी हुई दूरी का एक बहुत बड़ा कारण पति–पत्नी का एक दूसरे पर किसी तीसरे की उपस्थिति के कारण शक या वहम है। इस तीसरे के प्रवेश को लेकर पति – पत्नी सम्बन्ध मे। दुराव आ जाने पर सहज बाते।, क्रिया कलाप भी मन मे। शंका उत्पन्न करते। है। तीसरा आदमी (मन्नू भण्डारी) मे। शंका से पति को कुछ ऐसा लगता है मानो भीतर कुछ हो रहा है जो उसे एब नार्मल बनाता जा रहा है। ऐसे मे। शकुन उसे बड़ी अपरिचित और पराई सी लगती है संशय और द्वन्द से ग्रस्त शकुन ने दुःख से दुःखी और एक अजान आशंका से त्रस्त सतीश एक ही बात महसूस करता कि शकुन उससे दूर होती जा रही है उसके शरीर से भी और मन से भी।[1] मन के स।शय ने उसकी आत्मा को दुर्वल बना दिया है। यह उसका काम्पलेक्स ही है जिसने। आलोक की उपस्थिति मे। उसकी सोच को शंकालु ओछा और निकृश्ट कर दिया है।

दुधनाथसिंह की कहानी सब ठीक हो जायेगा के दाम्पत्य जीवन मे।

कुछ भी ठीक नही है। पत्नी स्वच्छन्द यौनाचार के लिए विवश है और न चाहते हुई भी इसे स्वीकार कर लेना पति की लाचारी है। हीनभाव से ग्रस्त लाचार और असमर्थ पति मिक्षा की पत्नी की वेश्या वृत्ति के बारे मे। सब कुछ मालूम है लेकिन करे क्या ? बेरोजगार और बीमार पति पत्नी की बेबफाई को दार्शनिक भाव से स्वीकार कर लेता है सब ठीक हो जायेगा। नरेटट मे। मिश्रा के तनाव और अवसाद का भोक्ता स्वंय भी है। मिश्रा पत्नी के अनैतिक सम्बन्ध स्वच्छन्द यौनाचार का प्रत्यक्षदर्शी है। लेकिन अपनी असमर्थता के कारण अकेलेपन की य।त्रणा मे। जैसे दम तोड़ता सा लगता है।[2]

इन कहानयिो। के अद्वययनोपरान्त कहा जा सकता है कि आज आधुनिकता और परम्परा के बीच की खींचातानी के कारण आम आदमी का अपने समाज परिवार और जीवन से लगाव समाप्त होता जा रहा है। परम्परागत मूल्यो। का विद्यटन तथा संयुक्त–परिवार का टूटना समाज मे। व्याप्त भ्रश्टाचार चोर बाजारी और घूस खोरी आदि से आक्रांत हुआ हताश निराश और पराजित युवा वैज्ञानिक प्रगति और औद्योगिक विकास के फलस्वरूप आज की मशीनीकृत और महानगरीय सभ्यता के दबाब मे अकेला अजनबी और फालतू तो हो ही गया है स्वय। को असुरक्षित असहाय और व्यर्थ भी महसूस करने लगा है।[1]

आधुनिक युग की यथार्थ स्थितियॉ भयावह समस्याओ। मे। जीवन की जटिलताओ। के कारण व्यक्ति सारे संबंधो। से ही नही बल्कि स्वय। से भी कटता गया है। इसके फलस्वरूप समाज और संबंधो। के प्रति व्यक्ति के मन मे अनास्था ने जन्म लिया है। तथा जीवन मे हताशा, निराशा, ऊब, कुण्ठा, घुटन, संत्रास, अकेलापन, व्यर्थताबोध, और मृत्यूबोध के कारण अस्तित्व का जो संकट पैदा हो रहा उससे व्यक्ति अपने से, अपने से, समाज से और व्यवस्था से टूटकर निखरता जा रहा है।

संदर्भ सूची

1. राजेन्द्र–यादव – एक दुनिया समानान्तर प्रश्ठ (221)।
2. ज्ञान र।जन :– फे।स के उधर, और उधर स।ब।ध पृश्ठ – 139।
3. दूधनाथ सि।ह :– सपाट चेहरे वाला आदमी रक्तपात पृश्ठ – 121।
4. श्रीका।त वर्मा :– दूसरे के पैर – साथ पृश्ठ– 127।
5. मन्नू भण्डारीः– यही सच है और अन्य कहानियाँ तीसरा आदमी पृश्ठ–34 2. दूधनाथसि।ह : सपाट चेहरे वाला आदमी, सब ठीक हो जायेगा पृश्ठ–45।